कहीं रूठी न रह जाएं मां लक्ष्मी

आश्विन मास की पूनम के उजाले के साथ ही घोर अंधकार से भरी रात में जीवन को खुशहाल करने के पर्व की दस्तक हो गई है. दीपोत्सव पर तन-मन को शांति रूपी उजाले से रोशन करने के संकल्प व समृद्धि की चाहत में श्री, वैभव, ऐश्वर्य और तमाम संसारिक सुखों की अधिष्ठात्री मां लक्ष्मी का स्मरण किया जाता है.

देवी लक्ष्मी को धन सम्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी के रूप में पूजा जाता है, सुख-समृद्धि और शांति की मंगल कामना के लिए वैभव की देवी माता लक्ष्मी का पूजन किया जाता है. मां लक्ष्मी जिस पर भी अपनी कृपा दृष्टि डालती हैं, वह दरिद्रता, दुर्बलता, कृपणता से मुक्त हो जाता है.

शुक्रवार मां लक्ष्मी का प्रिय दिन

शुक्रवार मां लक्ष्मी का प्रिय दिन माना गया है. इस दिन धन, ऐश्वर्य, भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए मां की पूजा और उपाय दोहरा लाभ दिलाते हैं.

वैसे लक्ष्मीजी की पूजा हर घर में होती है, लेकिन हर घर में समृद्धि नहीं आती. कारण, कई बार हम अज्ञानतावश उन्हें नाराज कर देते हैं. उनकी पूजा-अर्चना, विधि-विधान और उपयुक्त समय से नहीं करते, इसलिए हमें उनकी नाराजगी का भाजक बनना पड़ता है. दीपावली माता लक्ष्मी को मनाने का उत्तम समय है. दीपोत्सव की सबसे बड़ी खासियत है रोशनी, क्योंकि इस पर्व पर तन-मन व आत्मा को भी रोशन करने के महत्व से दीपों की जोत जलाई जाती है इसलिए यह प्रकाशोत्सव भी कहा जाता है. दरअसल, शास्त्र व परम्पराओं के मुताबिक, जीवन के लिए अर्थ यानी धन व भोग्य वस्तुओं की बहुत अहमियत बताई गई है. खासतौर पर धन को लक्ष्मी स्वरूप माना गया है, यही वजह है कि अक्सर लक्ष्मी के पीछे दुनिया भागती दिखाई देती है.

चंचल स्वभाव वाली देवी

चूंकि माता लक्ष्मी का स्वभाव चंचल माना जाता है, इसलिए वह कहां जाना और रहना चाहती हैं, अगर यह जान लें तो संभवतः धन ही नहीं, इच्छा पूर्ति व सुख- शांति की कवायद में चल रही दौड़-भाग कम या खत्म भी हो सकती है, क्योंकि फिर लक्ष्मीजी आप से कभी मुंह नहीं मोड़ेंगी.

प्रतिदिन सच्चे मन से लक्ष्मी पूजन करने से वे आपके निवास पर स्थायी रूप से रुक सकती हैं. जिस घर में प्रतिदिन श्रीसूक्त का पाठ होता है, वहां मां लक्ष्मी अवश्य निवास करती हैं.

कुबेर पूजन का विशेष महत्व

दीपावली में धन के देवता कुबेर की पूजा का भी विशेष महत्व है. इसके लिए चांदी के एक कटोरे में अपनी क्षमता अनुसार 5, 11, 21 अथवा 51 चांदी के पुराने सिक्के रख कर उत्तर की तरफ मुंह करके इनकी पूजा करनी चाहिए. पूजा के उपरान्त इस पात्र को दक्षिणी दीवार स्थित अलमारी में सुरक्षित रख लेना चाहिए. इसको कभी खर्च में नहीं लेना चाहिए.

किसी वजह से चांदी के सिक्के न उपलब्ध हो पाएं, तो तांबे के पुराने सिक्के भी इस्तेमाल किए जा सकते हैं और अगर ये भी उपलब्ध नहीं हों, फिर जो भी उपलब्ध हों, उन सिक्कों. को रखा जा सकता है.

विशेष ध्यान रखने की बात है कि कटोरे में सिक्के ही रखे जाएं. कागज की मुद्रा न रखी जाएं कुबेर जी की पूजा के साथ-साथ आदि शंकराचार्य द्वारा रचित कनकधारा स्तोत्र का पाठ लक्ष्मी प्राप्ति के उपायों में आश्चर्यजनक तीव्रता लाता है. कामना है कि इस दीपावली पर आपके जीवन में भी स्वर्ण के साथ-साथ खुशियों और समृद्धि की बरसात होती रहे.

दीपावली पर बन रहा है विशेष योग

इस बार दीपावली पर सौभाग्य, बुधादित्य व धाता योग बन रहा है. ये तीनों योग बहुत ही विशेष है. इन योगों में की गई लक्ष्मी पूजा से हर प्रकार के सुखों की प्राप्ति संभव है. ये योग धन लाभ के लिए भी बहुत शुभ माने गए हैं. अनाज, किराना, धातु व राजनीति से जुड़े लोगों के लिए ये योग बहुत खास रहेंगे. गुरु इस समय सिंह राशि में स्थित हैं. इस कारण भी देश के लिए यह दीपावली महत्वपूर्ण रहेगी. सभी ओर आनंद रहेगा एवं व्यापार में उन्नति होगी.

गुरु सिंह राशि में व राहू कन्या राशि में रहने से लक्ष्मी प्राप्ति के लिए किए गए उपायों में सफलता मिलेगी. राहू की अच्छी स्थिति के कारण इस दिन किए गए तांत्रिक प्रयोग सिद्ध होंगे.

महाभारत में लिखित है कि आलसी और परिश्रम न करने वाले से महालक्ष्मी रूष्ट हो जाती हैं, इसलिए आलस का त्याग करें और मेहनत से काम करें, माता लक्ष्मी आप पर हमेशा प्रसन्न रहेंगी तथा धन की वृद्धि होगी.

जहां भी स्वच्छता एवं सुव्यवस्था के गुण होंगे, वहां दरिद्रता का कोई स्थान नहीं होता, लेकिन यदि आसपास का वातावरण साफ- सुथरा नहीं हो, तो मां लक्ष्मी अपने पीछे दरिद्रता छोड़ व्यक्ति के जीवन से सदैव के लिए विदा ले लेती हैं, इसलिए लक्ष्मीजी की असीम कृपा पाने के लिए घर से अवांछित सामान, पुराने कपड़े, जूते, डिब्बे आदि हटा दे.

सच्ची समझ का दीया जले

ज्ञान का दीपक नहीं जला, तो आप बाहर करोड़ों दीये जला लें, भीतर अंधकार ही रहेगा. जहां अज्ञान है, वहां दुख है, डर है, चिंता है. आज हम खुद से सवाल करें, हमारे जीवन में किस चीज का शासन है- बाहर की रोशनी का या भीतर के ज्ञान का?

आनंदमूर्ति गुरु मां

वर्ष की सबसे काली रात अमावस्या पर दीपोत्सव मनाया जाता है. अमावस्या का अर्थ है अज्ञान. यह पूरे वर्ष की वह घोर निराशा और जड़ता है, जिसे हम जीवन की भागदौड़ में बटोर लेते हैं. दीपावली का दिव्य संदेश है जहां अज्ञान है, वहां दुख है, डर है, चिंता है और सबसे बड़ी पीड़ा है- जन्म-मरण का चक्र, लेकिन जहां ज्ञान का दीपक जलता है, वहां 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' का बोध होता है. सब कुछ ब्रह्म है, उसके अलावा और कुछ भी नहीं.

यदि सच्ची समझ का दिया जल जाए, तो हमारे लिए रोज दीपावली है. ज्ञान का दीपक नहीं जला, तो आप बाहर करोड़ों दीये जला लें, भीतर अंधकार ही रहेगा. महादेव के त्रिशूल से ब्रह्मा के अहंकार वाले पांचवें सिर का कट जाना इस बात का प्रतीक है कि आत्मज्ञान के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा हमारा अहंकार है. वह भाव, जिससे हमने माया को जानने का मिथ्या दावा किया. जब तक हम यह मानते रहेंगे कि हम कर्ता हैं और संसार के रहस्य को जान सकते हैं, तब तक ज्ञान का उदय नहीं हो सकता.

'योगवासिष्ठ' में श्रीराम के वैराग्य को शांत करते हुए गुरु वसिष्ठ यही समझाते हैं कि यह सारा संसार कुछ और नहीं, बल्कि तेरे ही मन की रचना है, ठीक वैसे ही जैसे रात्रि का स्वप्न. यह माया है, जो प्रतीत तो होती है, पर वास्तव में है नहीं. गुरु वसिष्ठ कहते हैं- 'हे राम ! इसके पहले भी कई बार तेरा जन्म हो चुका है. हम पहली बार नहीं मिल रहे, नहीं आखिरी बार.' यह ब्रह्मांडीय काल रेखाकार नहीं, बल्कि वृत्ताकार है, जिसमें न आदि है और न अंत. यह जीवन, कर्म, सुख-दुख का चक्र तब तक चलता रहेगा, जब तक हम अज्ञान को स्वीकार करते रहेंगे और स्वयं को शरीर तक सीमित मानते रहेंगे. ज्ञान का प्रकाश इस भ्रम को तोड़ता है और हमें इस शाश्वत सत्य से जोड़ता है कि न कोई जन्म है, न कोई मृत्यु, बस एक ही ब्रह्म स्वरूप है.

जब तक दीया जलता है....

जितनी काली अमावस्या की रात्रि होती है, फैली हुई रोशनी आंखों को उतनी ही अच्छी लगती है, लेकिन इस त्योहार में छिपा एक गहरा दर्शन है- दीपक की यह रोशनी तभी तक है, जब तक दीपक में तेल है और बत्ती है. जैसे ही तेल और बत्ती खत्म होते हैं, रोशनी खत्म हो जाती है. दीपक की यह क्षणभंगुरता हमें शरीर की नश्वरता का बोध कराती है.

जब तक शरीर में सामर्थ्य और शक्ति होती है, तभी तक यह संसार आपके साथ चलता है. एक बार शरीर की शक्ति कम हो गई या चली गई, तो शरीर के साथ जीना मुश्किल हो जाता है. आंखें देख नहीं पाती हैं, कान सुन नहीं पाते हैं, तब जीवन मुश्किल हो जाता है. ऐसी स्थिति में, अगर तिजोरी में दस करोड़ या दस अरब भी रखे हों, तो भी सब व्यर्थ है.

इंसान सारा इंतजाम इसलिए करता है कि मैं सुरक्षित रहूं, लेकिन अंत में अक्सर निराशा ही हाथ लगती है. यह दीपक का तेल और बत्ती ही है, जो हमें जीवन भर भ्रम में रखते हैं. जब तक शरीर में सामर्थ्य होता है, तब तक बुद्धि नहीं चलती, हम धन तथा मान-सम्मान के अहंकार में डूबे रहते हैं. जब बुद्धि चलने लगती है, अर्थात शरीर कमजोर हो जाता है, रोग व कष्ट आते हैं, तब शरीर कुछ करने लायक नहीं रह जाता.

दीपावली का यह दीपक हमें चेतावनी देता है कि समय रहते, जब तक शरीर में सामर्थ्य है, तभी ज्ञान का तेल और भक्ति की बत्ती भर लो, ताकि यह ज्ञान का प्रकाश कभी खत्म न हो.

सनातन विजय का पर्व

दीपावली पर भगवान राम के 14 वर्ष का वनवास पूरा करके अयोध्या लौटने की घटना त्रेता युग में घटी थी, लेकिन इसका महत्व आज भी बना हुआ है. दुनिया की कई उन्नत सभ्यताएं आज केवल खंडहरों में सिमट गई हैं, पर सनातन धर्म एक जीवंत संस्कृति के रूप में आज भी हर त्योहार में सांस ले रहा है और आगे भी लेता रहेगा.

श्रीराम का वनवास एक दुखद घटना नहीं, बल्कि आध्यात्मिक उत्थान का काल था. श्रीराम ने इसे अप्रतिम वरदान कहा. इस अवधि में श्रीराम, लक्ष्मण और सीताजी ने अपने गुरुकुल के ज्ञान को व्यवहार में जिया, उन्होंने कठिनतम परिस्थितियों में भी धर्म का पालन किया.

श्रीराम और देवी सीता का प्रेम हमें सिखाता है कि जीवन में सुख या दुख स्थान (महल या वन) से नहीं, सच्चे संबंध और समर्पण से आता है. सीताजी कहती हैं- 'मेरी दृष्टि तो आपके ऊपर होगी, न कांटे दिखेंगे, न बीहड़ दिखेगा. मेरे आनंद का सरोवर इन्हीं श्री चरणों में है.' उनका यह समर्पण दिवाली को एक प्रेम पर्व भी बनाता है.

सनातन धर्म का कोई संस्थापक नहीं है. हम श्रीराम या श्री कृष्ण का जन्म दिवस गिन सकते हैं, परब्रह्मा, विष्णु और शंकर की उत्पत्ति का कोई दिन या तारीख नहीं है. यह दर्शन बताता है कि ईश्वर किसी 'कारण' से उत्पन्न नहीं हुआ. जिसका कार्य-कारण होता है, वही माया होती है और जो स्वयं माया - आधार है, वह कार्य कारण से परे है.

ब्रह्मा जब स्वयं के जन्म और कमल के डंठल का अंत नहीं खोज पाए, तब विष्णुजी ने कहा, 'जिसका अंत मिल जाए, वह माया होती ही नहीं है.' जिस प्रकार ईश्वर अनादि और अनंत है, उसी प्रकार आत्मा भी है. जब तक तुम स्वयं को उस ब्रह्म स्वरूप से नहीं जोड़ोगे, तब तक जीवन का दीपक बुझता रहेगा और तुम जन्म-मरण के झूलों में झूलते रहोगे.

इस दीपावली पर हमें अपने हृदय से अज्ञान को हटाना है, अहंकार त्यागना है और ज्ञान के उस शाश्वत प्रकाश को प्रज्वलित करना है, जो यह बोध कराए कि हम केवल एक शरीर नहीं हैं, बल्कि उस अनंत ब्रह्म का अंश हैं. यही दीपावली का संदेश है- भीतर से प्रकाशित होने का उत्सव!

माता लक्ष्मी का बना रहे आशीर्वाद

महिलाओं ने दी दिवाली की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रतिनिधि/प्रतिदिन अखबार

अमरावती, 20 अक्टूबर- प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी कार्तिक मास कृष्ण पक्ष की अमावस्या तीथि को दिवाली मनाई जायेगी. दिवाली का पर्व लोगों के जीवन में खुशियां व उत्साह के साथ नई उमंग लेकर आता है. इस दिवाली सभी के रिश्तों में मिठास बनी रहे, इस कामना के साथ माता लक्ष्मी से प्रार्थना करते है. कहा जाता है कि इस दिन प्रभू श्रीराम 14 वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या लौटे थे. इस समय भी अमावस्या थी. उनके आगमन की खुशी और अमावस्या के काले अंधेरे को दूर करने भगवान राम के स्वागतार्थ घर-घर में दीप जलाकर उनका स्वागत किया था. तब से दिवाली पर दीप जलाने की प्रथा प्रारंभ हुई जो आज भी जारी है. हिंदू धर्म के सबसे बडे त्योहार दिवाली की शुभकामनाएं देती कुछ महिलाएं:-

दसों दिशाओं से सुख, समृद्धि की कामना

दीपावली के पावन त्योहार पर सभी को सहपरिवार शुभकामनाएं. दिवाली का यह त्योहार हर किसी के जीवन में नई खुशियां लाता है. जीवन को आनंद से विभोर कर देता है. इस दिवाली स्वदेशी के नारे के साथ सभी के जीवन में दसो दिशाओं से सुख, शांति, समृद्धि एवं सफलता का वास हो यही मां के चरणों में कामना करते है.

गंगा खारकर, पूर्व अध्यक्ष
भाजपा महिला आघाडी

दिवाली यानि पटाखों की आतिषबाजी

दिवाली यानि आनंद, उत्साह, स्नेह, दिवाली यानि रंगोली की आकर्षकता, दिवाली यानि पटाखों की आतिषबाजी, दिवाली यानि उबटन की सुगंध, दिवाली का मतलब रिश्तों की डोर, दिपावली यानि दियों की पंक्तियां, दियों का प्रकाश, दियों का झगमगाट. इस दिवाली की आपके जीवन में सुख, समृद्दी के साथ यह दिवाली आपके लिए मंगलमय हो यही सभी को शुभकामनाएं देते है.

सुरेखा लुंगारे, पदाधिकारी
भारतीय जनता पार्टी

आनंद व उत्साह का पर्व दिवाली

दिवाली एक ऐसा त्योहार है, जिसमें हर कोई एक दूसरे के बीच की गलतफहमियां, दूरिया भूलाकर केवल और केवल उत्साह के साथ इस पर्व को मित्र परिवार और अपनों के साथ मनाते है. जीवन से जुडे रिश्तों के अंधेरे को दूर करने का प्रयास करते है. पांच दिनों तक चलने वाले इस पर्व की तैयारियां नवरात्री से शुरु हो जाती है. जो भाईदुज के साथ ही समाप्त होगी. यह पर्व अपनों से अपनों को मिलाने का है.

जयश्री वानखडे, अध्यक्ष
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस महिला संगठन

इस दिवाली स्वदेशी को दें महत्व

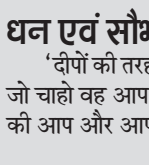

सभी को कार्तिक मास के त्यौहार दीपावली, गोवर्धनपूजा, भाईदूज की ढेरो शुभकामनाएं. 'दिपावली का मनभावन प्यारा त्यौहार आया, दीपक, मिठाई, फुलझडियों की खुशियां लाया, दिपावली पर्व को हम सब कुछ इस तरह मनाए, गरीबों से सामान खरीदें, उनका घर रोशन हो जाए, मिट्टी का दीप जलाएं, स्वदेशी सामान की खरिदारी को महत्व दें, देश प्रेम का अलख जगाए, अपनों से ज्यादा दूसरों को खुशी दें, खुशियां मनाएं.

राणी करवा, पूर्व अध्यक्ष
माहेश्वरी महिला मंडल

प्रकाशमय पर्व की सभी को मंगलमय कामना

दिपावली यह दियों का त्योहार है. इस त्योहार में हम 'आओ दीप जलाए, दीपो की प्रकाश के जैसे, प्रकाशमय हो नभ सारा...' इसी कामना के साथ सभी को दिपावली की हार्दिक शुभकामनाएं देते है. यह दिवाली सभी के जीवन को प्रकाशमय बनाये साथ ही उनके जीवन में खुशियों के रंग भरे. सभी बंधुओं को दिपावली की हार्दिक शुभकामनाएं.

विजया राठी, पूर्व अध्यक्ष
माहेश्वरी महिला मंडल

धन एवं सौभाग्य का प्रतिक पर्व

'दीपों की तरह आपका भाग्य जगमगाता रहे. जो चाहो वह आप सब जीवन में पाये. मां लक्ष्मी की आप और आपके परिवार पर हमेशा ही कृपा बनी रहे, इसी कामना के साथ आपके जीवन में धन एवं सौभाग्य के प्रतिक पर्व दीपावली की जगमगाहट बनी रहे यही कामना करते है. सभी को दिवाली की हार्दिक शुभकामनाएं.

रुचि ककरानिया, पूर्व अध्यक्ष
अग्रवाल सखी मंच

धन और वैभव की देवी मां लक्ष्मी

दीपावली देश में मनाए जाने वाला सबसे लोकप्रिय त्योहार है. जिसे शुभ माना जाता है. इसे रोशनी के रूप में भी मनाया जाता है. यह बुराई पर अच्छाई की की जीत का प्रतिक है. दीपावली कार्तिक मास की अमावस्या को यह त्योहार मनाया जाता है.

इस दिन लोग लक्ष्मी माता की पूजा करते हैं, जो हमारे जीवन में धन और समृद्धि की देवी है. दीपावली पर रंगोली से आंगन सजाना, घर में साफसफाई करना, स्वादिष्ट व्यंजन बनाना, दिए जलाकर घर को रोशन किया जाता है. यह त्यौहार परिवार में सब मिलजुल कर हंसी खुशी से मानते हैं. आप सभी को दीपावली की शुभकामनाएं.

किरण मुंधडा, जिला सचिव
माहेश्वरी महिला संगठन

सफलता, स्वास्थ्य व समृद्धी का नया प्रकाश

लाखों दियों से पूरे आसमान जगमगाने लगे. तन-मन में आनंदोत्सव की अनुभुति रहे. इसी कामना के साथ इस वर्ष दीपपर्व दिवाली में आपके जीवन में सफलता के साथ निरायम स्वास्थ्य एवं समृद्धी का नया प्रकाश पर्व आरंभ हो, इसी कामना के साथ सभी को दिवाली की ढेरो बधाईयां देते है. इस दिवाली आप का जीवन प्रकाश की तरह चमकता रहे. यही कामना करते है.

डॉ अल्बीना हक, अध्यक्ष
पहल फाऊंडेशन

मिट्टी के दीयों की बजाय चायनीज दीयों की मांग अधिक

बाजार में बोला जा रहा है 150 से 800 रु. प्रति दर्जन भाव

प्रतिनिधि/प्रतिदिन अखबार

अमरावती, 20 अक्टूबर- दीपावली पर्व प्रारंभ हो जाने से शहर के बाजारों में दीपावली के लिए आवश्यक विविध साहित्यों की दुकानें सज गई हैं. इनमें दीपावली के लिए लगने वाले दीयों की अच्छी मांग होती है, किंतु इस बार मिट्टी के दीयों सहित सेल के, पानी के, बिजली के दीयों की मांग बढ़ी हुई नजर आती है.

चीन से आयात होनेवाले इन दीयों की रोशनाई नागरिकों को पसंद आ रही है. जिसके कारण इस दिवाली में तेल की बजाय सेल पर चलने वाले दीयों को प्राथमिकता मिल रही है. शहर के बाजारों से ऐसे लाखों दीयों की बिक्री हो रही है तथा 15 से 20 लाख तक का व्यापार होने का अनुमान है. चीनी सेल के दीये मुंबई, गुजरात से बड़े प्रमाण में शहर के बाजारों में आ रहे हैं. फिलहाल नागरिकों में इन दीयों का आकर्षण है तथा इन दीयों की बिक्री बढ़ी हुई नजर आती है. अबकी बार बाजार में पानी पर चलने वाले दीये, सेल के बटनवाले दीये, टी लाइट, मोम के दीए, शाडो दीए, स्मोक लेस दीए आदि प्रकार के दीए बाजार में उपलब्ध हैं. इन दीयों सहित फैन्सी कैंडल भी उपलब्ध हैं. यह दीये और कैंडल अनेक रंगों में उपलब्ध हैं तथा रंगीन दीयों का आकर्षण अधिक है. फिलहाल इन दीयों की बाजार में प्रति दर्जन कीमत 150 रुपयों से 800 रुपयों तक है. यह सेल पर चलने वाला दीया 4 दिन चलता है, इन दीयों को तेल और बाती की जरूरत नहीं होती. उसी प्रकार यह दीया हवा में भी शुरू ही रहता है. इसके कारण फिलहाल नागरिक भी इन दीयों की मांग कर रहे हैं तथा इस दिवाली पर आंगन में तेल की बजाए चीनी सेल के दीयों की रोशनाई होगी. इन दीयों की बिक्री बड़े प्रमाण में हो रही है.

तेल के दीयों का आकर्षण अधिक

पिछले वर्ष की तुलना में सेल के दीयों की मांग अधिक है. ग्रामीण क्षेत्रों के किसान टप्पे-टप्पे में बाजार में आ रहे हैं. उन पर शहर के बाजार आधारित हैं. जिसके कारण प्रतिवर्ष के समान कम-अधिक प्रमाण में इस वर्ष का भी व्यापार होने की संभावना है. फिलहाल तेल के दीयों का आकर्षण अधिक होने से उनकी बिक्री अधिक हो रही है.

- विनोद खत्री, व्यापारी

लक्ष्मी मूर्ति का विसर्जन विधिविधान से होगा

भाजपा महामंत्री ललित समदूरकर की मूर्ति विसर्जन उपक्रम की संकल्पना

प्रतिनिधि/प्रतिदिन अखबार

अमरावती, 20 अक्टूबर- दीपावली के पावन पर्व पर बहुतांश हिंदू समाज के नागरिक लक्ष्मी पूजन के दिन लक्ष्मी की मूर्ति लाकर उसका विधिविधान के साथ पूजन करते हैं. घर में खुशहाली रहे इस मंगल कामना को लेकर पूजन किया जाता है. बहुत बार मूर्ति का विधिविधान के साथ विसर्जन नहीं किया जाता. इस विषय को देखते हुए भाजपा महामंत्री ललित समदूरकर ने मित्र परिवार के सहयोग से लक्ष्मी पूजन मूर्ति विसर्जन उपक्रम की संकल्पना की है.

ललित समदूरकर ने बताया की कई बार दिवाली के बाद लक्ष्मी की मूर्ति जगह-जगह पड़ी दिखाई देती है. विसर्जन न किये जाने से भावना आहत होती है. कई बार श्रध्दालुओं को मूर्ति विसर्जन के लिए अड़चन का सामना करना पड़ता है. ऐसी अवस्था में मित्र परिवार की ओर से इस वर्ष लक्ष्मी मूर्ति विसर्जन उपक्रम चलाया जा रहा है.

लक्ष्मी मूर्ति संकलित कर उसका विधिविधान के साथ विसर्जन किया जाएगा. ललित समदूरकर मित्र परिवार के विजय चिलात्रे, दीपक राऊत, पिंटू देशमुख, राजू लिखितकर, विकास ददगाल, विजय मगर्द, दीपक अनासाने, जीवन गुजरे, सुरेश पडोले, संजय पातुर्डे, दिलीप करुले, दिनकर वैद्य, संदीप गोडबोले, विनायक पटवर्धन, किशोर सावले, पंडित पांडुरंग वझरकर, रुपेश चव्हाण, एड. अतुल भेरडे, अजय चितोडे, गोवर्धन सगने उपक्रम में सहभागी होंगे.

मूर्ति संकलन के लिए 2 केंद्र घोषित : ललित समदूरकर बताया की लक्ष्मी मूर्ति संकलन के लिए शंकर नगर रोड, नागलकर हॉस्पिटल के पास ओम आई बिल्डर्स एन्ड डेवलपर्स तथा जवाहर रोड महाराष्ट्र खादी भंडार के सामने समर्थ ऑप्टिकल्स इन 2 केंद्रों पर दोपहर 12 से शाम 7.30 बजे तक व्यवस्था की गयी है. 27 अक्टूबर से 1 दिसंबर तक लक्ष्मी मूर्ति विसर्जन उपक्रम चलाया जायेगा.

अंतिम मतदाता सूची 21 नवंबर को होगी जारी

प्रतिनिधि/प्रतिदिन अखबार

अमरावती, 20 अक्टूबर- महानगरपालिका चुनाव की तैयारियां तेज हो गई हैं. अंतिम प्रभाग रचना घोषित होने के बाद अब मतदाता सूची का कार्यक्रम भी जारी कर दिया गया है. राज्य चुनाव आयोग के अनुसार, 21 नवंबर को अंतिम मतदाता सूची प्रकाशित की जाएगी, जबकि मतदान केंद्रनिहाय सूची 10 दिसंबर को जारी की जाएगी. मतदाता सूची तैयार करते समय 1 जुलाई 2025 को मतदान के लिए अर्हता तिथि तय की गई है. हालांकि यह सूची 2011 की जनसंख्या के आधार पर तैयार की जा रही है, लेकिन लोकसभा और विधानसभा चुनावों के बाद मतदाताओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है. महानगरपालिका क्षेत्र में इस समय लगभग 6,76,428 मतदाता दर्ज हैं. चुनाव के लिए करीब 450 मतदान केंद्र बनाए जाएंगे जो 22 प्रभागों के अंतर्गत होंगे. चुनाव आयोग द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार प्रारूप मतदाता सूची 6 नवंबर 2025 को प्रकाशित की जाएगी. इस पर आपत्तियां और सुझाव 6 से 14 नवंबर तक लिए जाएंगे. सुनवाई के बाद अंतिम सूची 21 नवंबर को घोषित होगी.